उम्मीद मुबारक !

रविन्द्र मरडिया

की कुछ ग़ज़लें

प्रकाशक
थैंक्यू पब्लिशर्स

प्रतिलिप्यधिकार © रविन्द्र मरडिया, २०२१
सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक से लिखित अनुमति के बिना, इस प्रकाशन के किसी भी भाग को किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, इलेक्ट्रॉनिक या मैकेनिकल, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या किसी भी सूचना भंडारण और पुनर्प्राप्ति प्रणाली सहित, जिसे अब जाना जाता है या आविष्कार किया जाना है, को पुन: प्रस्तुत या प्रसारित नहीं किया जा सकता है, सिवाय इसके कि एक समीक्षक जो एक पत्रिका, समाचार पत्र या प्रसारण में शामिल करने के लिए लिखी गई समीक्षा के संबंध में संक्षिप्त अंश उद्धृत करना है.

मूल्य : ₹ ४९०.०० सिर्फ

ISBN: xxx xxx xxx xxx xxx xxx

प्रथम संस्करण
भारत में मुद्रित:
सिद्धि प्रिन्टेक, अहमदाबाद.

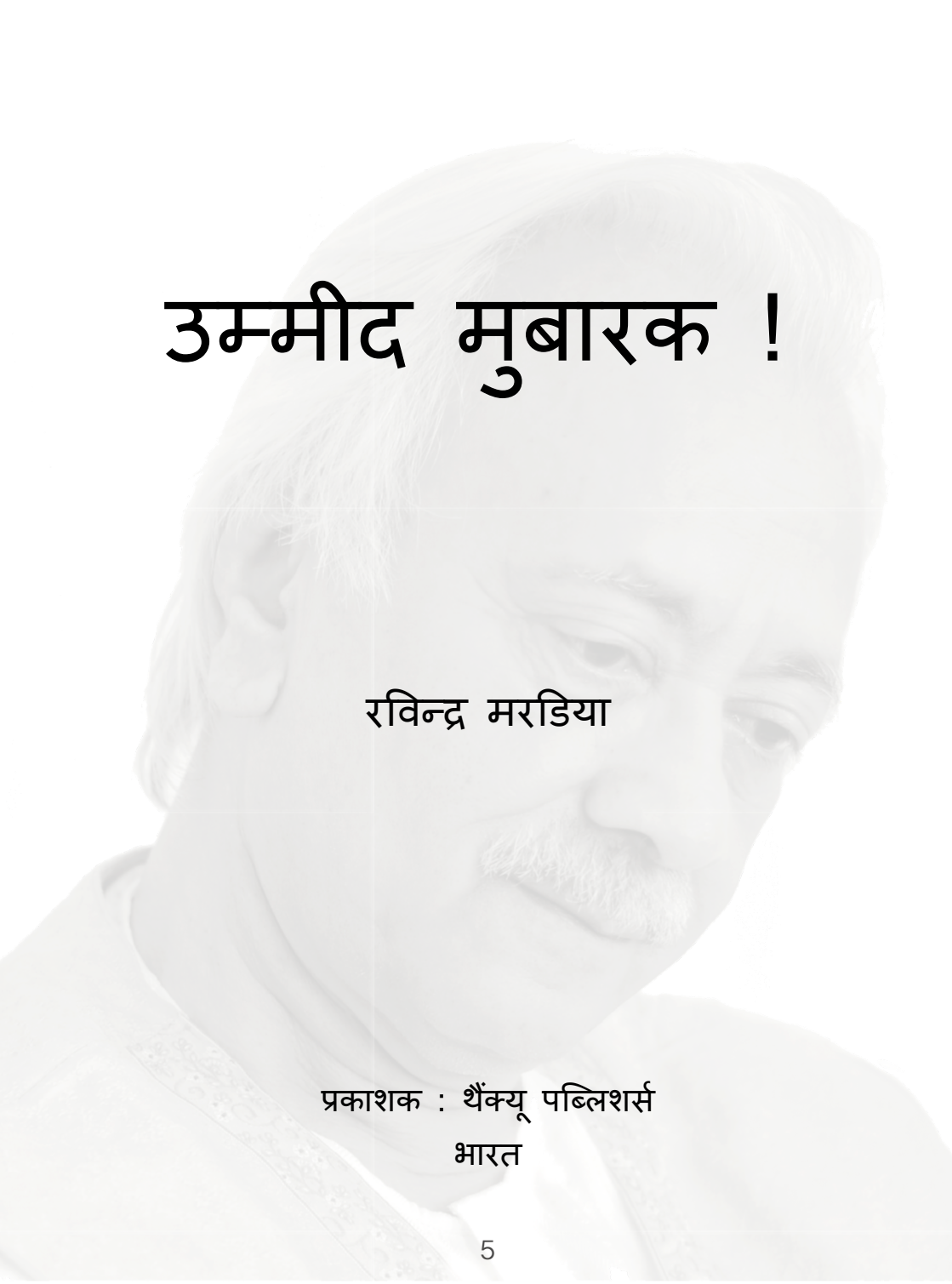

उम्मीद मुबारक !

रविन्द्र मरडिया

प्रकाशक : थैंक्यू पब्लिशर्स
भारत

उम्मीद मुबारक !

समर्पित है

मेरी प्रिय पुत्री किन्नरी,

जमाई विशाल जी,

पुत्र गौरव व् पुत्रवधु प्रीती,

और विशेषकर मेरी दोहिती

काव्या

असाधारण, अद्भुत, प्रतिभाशाली और केवल

17 वर्ष की आयु में

निपुण प्रकाशित लिखिका.

प्रस्तावना अंजना संधीर के द्वारा

भूमिका

पिछले कुछ समय से, कोरोना काल के दौरान मैं अपने देहगाम वाले फार्म हाउस पर ही रहा. बीच बीच में मेरी चित्र कला से सम्बंधित गतिविधियां और कुछ अन्य कार्यक्रम चलते रहे. कुछ कविताओं की रिकॉर्डिंग की, कुछ वरिष्ठ चित्रकारों से फेसबुक और इंस्टाग्राम पर वार्तालाप किया. फिर भी मेरे पास काफी खाली समय था, शुरुआत में काफी सारी नई कविताओं का सृजन किया, उनका एक अलग से 'अर्धविराम', काव्य प्रकाशन हो रहा है.

लेकिन मुझ में शुरू से ही कुछ नया करने की जिज्ञासा और प्रवृत्ति रही है. इसीलिए सोचा की हिन्दी कविताओं के साथ कुछ नया भी लिखा जाये. हिंदी में ग़ज़ल लिखने का भी प्रयास किया जाये. इस दौरान काफ़ी सारे कवि सम्मेलन और मुशायरों को भी मैंने यूट्यूब पर देखा, और ग़ज़लों को कहने के अंदाज़ से मैं काफ़ी प्रभावित हुआ. ग़ज़लों को कहने और सुनने का आनंद अलग ही होता है.

मैंने शुरुआत की और कुछ ग़ज़लें अपने अंतरंग मित्रों को उनके विश्लेक्षण हेतु भेज दिया. ज्यादातर मित्रों ने बहुत तारीफ़ की, परन्तु बरेली के डॉ अब्निश चौहान जी ने साफ़ कहा, की आपके भाव और शब्दों का चयन तो अच्छा है, पर इन्हें ग़ज़ल नहीं कहा जा सकता. ग़ज़ल और कविता लिखने में बहुत फ़र्क होता है. ग़ज़ल लिखने के कुछ ख़ास नियम होते हैं. ग़ज़ल वही है जो इन निश्चित नियमानुसार लिखी जाए. ततपश्चात् मैंने गूगल पर ग़ज़ल लिखने के नियमों का अध्ययन किया. एक अच्छे ग़ज़लकार को अपना गुरु बनाया, और उनके साथ तक़रीबन एक महीने तक रोज़ एक-दो घंटे ग़ज़ल लिखने का अभ्यास किया. ग़ज़ल लिखने के नियम सीखे. उन्होने जो सिखाया मैं संक्षेप में बता रहा हूँ.

गजल के शाब्दिक अर्थ एवं व्युत्पत्ति के सम्बन्ध में हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं, कि गजल शब्द अरबी भाषा का ही है, जो प्रेमी और प्रेमिका के वार्तालाप के सन्दर्भ में प्रयोग किया जाता रहा है. धीरे - धीरे गजल प्रेम की संकीर्ण परिधि से बहार निकलकर प्रेम के व्यापक रूप में प्रयोग की जानी लगी है.

गज़ल में बहर का एक मुख्य रोल होता है, जिसके बिना हम गज़ल नहीं लिख सकते. गज़ल के बारें में जानने के लिए आपको इसके चरणों को समझना जरूरी होता है. गज़ल के मुख्य चरण होते हैं:-

बहर, काफ़िया, रदीफ़, मतला, शेर, मिसरा, मक्ता आदि.

बहर

बहर मात्राओं से बना हूआ एक मीटर है, जब आप ग़ज़ल को पढ़ेंगे, तो आपको "लालाला लालाला लालाला लला" इस तरह की एक लय का अहसास होगा। इसी लय को बहर कहा जाता है. हमने आपको बताया कि मात्राओं की कड़ियाँ होती है, इसी लय को मात्राओं में भी बदल सकते हैं. लेकिन आपको मात्राओं का ज्ञान होना जरूरी होता है. जिसके आधार पर गज़ल की हर पंक्ति लिखी जाती है. गज़ल के लिए कुल 32 मुख्य बहर माने जाते हैं, जिनके आधार पर ही कोई भी अपनी गज़ल लिखता है.

काफ़िया

काफिया किसी भी पंक्ति के अंतिम शब्द के पहले आने वाले शब्द या शब्दों के समूह को कहा जाता है. जिनका प्रयोग करने पर किसी भी रचना को प्रस्तुत करते समय आनंद की अनुभूति होती है.

रदीफ़

किसी भी रचना में काफिया के बाद आने वाले शब्दों के समूह को रदीफ कहा जाता है. किसी भी रचना में यदि रदीफ एक जैसे ही शब्द रहे हैं, तो उनमें कभी भी रदीफ बदला नहीं जाएगा, क्योंकि रदीफ कभी भी बदलता नहीं है. केवल काफिया ही बदलता है.

मतला

गजल में लिखे जाने वाले सबसे पहले दो मिसरे (पंक्ति) जिनमें दोनों में काफिया और रदीफ का प्रयोग होता है, उसे ही हम मतला कहते हैं.

मकता
गजल के अंतिम शेर को मकते का शेर कहा जाता है, उसमें गजल लिखने वाले का नाम होना अनिवार्य होता है.

मिसरा
गजल में लिखी जानी वाली हर पंक्ति मिसरा कहलाती है, गजल का हर मिसरा बहर में लिखा जाता है, मिसरे का साधारण अर्थ पंक्ति ही होता है.

शेर
गजल में लिखे जाने वाले हर दो मिसरे (पंक्ति) के समूह को शेर कहते हैं.

इसी प्रकार तुकांतता के आधार पर ग़ज़लें दो प्रकार की होती हैं-

मुअद्दस ग़जलें- जिन ग़ज़लों में रदीफ़ और काफ़िया दोनों का ध्यान रखा जाता है

मुकफ़्फ़ा ग़ज़लें- जिन ग़ज़लों में केवल काफ़िया का ध्यान रखा जाता है.

बहर, रदीफ़, मतला, मिसरा, मक्ता आदि शब्द, शायद ज़िंदगी में पहली बार सुने थे. कई दिनों तक जो भी विचार आ रहे थे, उन्हें ग़ज़लों के नियमानुसार ढालने का प्रयास किया. कुछ बार

मज़ा आया, लेकिन कई बार शब्दों को बहर में सजाने से ग़ज़ल कहने का मज़ा नहीं आ रहा था.

ज्यादातर ग़ज़लें सभी नियमों के अनुसार सही बन पाई, उन्हें छोड़कर, बाक़ी में मैंने बहर ठीक नहीं किया. उनको अपने कहने के अनुसार ही शब्दों में ढाल लिया. सभी ग़ज़लों में काफ़िया और रदीफ़ तो ठीक हैं, लेकिन कहीं कहीं बहर ठीक करने में, ग़ज़ल कहने के अंदाज़ के मज़े को ध्यान में रखते हुए, बहर में सजाना छोड़ दिया है. या बहर ठीक करने की कोशिश नहीं की. मुझे तो सिर्फ़ लिखने और कहने का ही आनंद उठाना था.

मेरी तक़रीबन सभी ग़ज़लों की बुनावट एक ही जैसी प्रतिरूप की है. मतले से लेकर मक्ते तक अगर एक शेर में मायूसी है, तो दूसरे में माशूक़, अथवा बेवफ़ाई की चर्चा, तीसरे में अपनी ख़ुद्दारी या शहादत की घोषणा, तो चौथे में सामाजिक व्यवस्था पर चोट. कहीं कहीं थोड़ी बहुत रुचि प्रकृति चित्रण में भी रमती है, तो किसी शेर मैं सामाजिक छाँव या धूप की बात है. और इस प्रकार मेरी ग़ज़ल पूरी हो जाती है.

मैंने ग़ज़ल कहने के अंदाज़ को ज़्यादा ध्यान में रखते हुए लिखी हैं. मैंने कहीं भी विशद लोकमंगल, सांप्रदायिक संकीर्णता, मानवतावाद, पूँजीवाद, समाजवाद, राष्ट्रीयता, अंतरराष्ट्रीयता, अध्यात्मवाद को मेरी ग़ज़लों में स्थान नहीं दिया हैं. मैंने सिर्फ़ प्रेमी और प्रेमिका के वार्तालाप के सन्दर्भ में ही लिखा है, जो मुझे दिन प्रतिदिन महसूस होता है. ये ग़ज़लें लिखी अब गई हैं,

लेकिन मेरे ज़हन में पिछले कई कई सालों से बसी हुई थी, शब्दों का रूप धारण अब किया है.

मेरे लेखन पर चित्र कला का बहुत प्रभाव है. आज के भावात्मक चित्रों को देख कर मन में जो विचार आ जाते हैं, उन्हें ही काग़ज़ पर उतारा है. मेरी लिखने की भाषा में न तो संस्कृत के तत्सम शब्दों का प्रयोग है, और न ही उसमें उर्दू, अरबी, फ़ारसी के शब्दों की भरमार है. सरल से सरल और ज़्यादा सुबोध शब्दावली का प्रयोग करने का प्रयास किया है.

रविन्द्र मरडिया

अनुक्रमाणिका

आपकी भी कुछ तो कहीं मजबूरी होगी,	21
मैंने, जब से, खुद को सजाया यहां,	22
अपने-अपने नए ख्यालों में ही रहे,	23
ख़्वाब, दिन में भी, अब सारे देखोगे तुम,	24
इस ज़माने में, जब तुम ना हमारे हुए,	25
अपने दिल की हसरत, क्यों कहते नहीं,	26
प्यार, करने का है डर, तो मैं क्या करूँ,	27
कौन किसका सहारा, सही तय करो,	28
यूँ तो, वो सबको अच्छे ही लगते रहे,	29
एक अरसे से, मन ये परेशान है,	30
आज, उनकी सोच में हूँ मैं,	31
अब, भरोसा ख़ुद पर ही रखना होगा,	32
जो, लिखा था लकीरों में, पाया वही,	33
संबंध, सदा आपसे मेरी बना रहे,	34
मन मेरा, बँटवारा कराने पर है,	35
तुम, किसके दम, पर दम भरते हो,	36
मेरे जीवन में, कुछ करता नहीं हूँ मैं,	37
घर से निकले तो ये अपनी ही हार है,	38
जान तू, लाखों में है, जान इक तू,	39
लगे हैं हम, उधार अपना चुकाने को,	40
हमसे करना है, तो प्यार करते रहो,	41
ना मेहनत लगी, ना ही पैसा लगा,	42
तजुर्बा, एक और करना चाहता हूँ,	43
कोई भी काम मुझको आज खर्चे की तरह लगता,	44

आप, मुझ से भी शायद डरने लगे हैं, 45
ज़ुबाँ से हर हकीकत, कुछ पलों में ही निकल जाती है, 46
जब भी देखा है चेहरा खुशी ही दिखी, 47
मैं ही जानू कि कैसे सम्भाला मुझे 48
मेरे हाथों को थामें तू जब मेरे साथ चलता है, 49
तोड़ के, दिल हमारा ही, थमाया हमें, 50
आज भी, तुमको मैं सोचता ही रहूं, 51
तुम बड़ी देर तक पास बैठे रहे 52
हम ज़मीं पर सभी से जो ज्यादा रहे, 53
जी रहे हैं मगर हमको मारे जहां, 54
नाक में दम किया तुम वहम ये करो, 55
आपको भी पता है कि हम कब मिले। 56
दिल में देखा तो दिल गुमशुदा मिल रहा, 57
मैं सही रासते पर जो चलने लगा, 58
ये ग़लत ही किया जो जुदा कर दिया, 59
दिल तुम्हारे पास है तो दिल से ही समझो इसे, 60
ऐसी बातें ना हो जिससे लड़ना पड़े, 61
एक अरसा बीता आज मिलना हुआ, 62
आप कर सकते अपनी हिफाजत नहीं, 63
आप मेरे जैसे नहीं चाहकर भी हुए, 64
तुम्हारे वास्ते क्या-क्या समझ कर लिख सकेंगे हम, 65
हर सुकूँ छोड़के दर्द को पाने से, 66
आपकी आशिकी की क्या बातें करूँ, 67
देखो तो यूँ अकेले ही रहते हैं हम, 68

मेरे अपनों में कैसी गदर हो गई, 69
हर समय क्या मुस्कुराना ज़रूरी है 70
तूने नशा कुछ ऐसा पिलाया मुझे 71
हर दम इतना ख़ुश दिखते हो तुम, 72
आपका हर गुनाह अपने सर ही लिया, 73
जब से, मैं अपने लिए, जीना सीखा हूँ, 74
अब आप किसके साथ है किसके नहीं, 75
अब कुछ दिन मैं अनजान रहना चाहता हूँ 76
लफ्ज़ खोलो नहीं कोई ख़तरा रहे, 77
क्या आप मुझ जैसे जी सकते हैं 78
गम मिले तो सुकूँ ऐसे खोजा नहीं, 79
ऐसा अहसास दिल को भी होने लगा, 80
आपके साथ में रहता जब तक रहा, 81
हालातों से मुझे कई बार लड़ना पड़ा, 82
क्या अभी भी वही पहले थे वैसे हो, 83
बात गूंगे से भी करना चाहूंगा मैं, 84
वो ज़माने से जब तक छुपा ना सका, 85
मुझसे मिलना तुम्हारा हो सकता नहीं, 86
अपना इतना बना मेरी जां सा लगा, 87
कितना अच्छा लगे मेरे घर सा बने, 88
आप महफ़िल में मेरी कहानी कहे, 89
सोचता हूँ ना खाऊंगा धोखा कभी, 90
ऐसा देखा यहां ये कई बार है, 91
हां, कई दिन से तेरा नहीं साथ था, 92

घर में आने दिया ना उजाला कभी, 93
जब नशे से किसी ने जगाया नहीं, 94
यार परदे से बाहर तो आओ कभी, 95
मेरे जीवन में जो था वो अब ना रहा, 96
चाहे दिखता सभी को सवेरा बहुत, 97
मेरा दिल तुमसे मिलना चाहता है 98
मेरा समय है साथ मेरे 99
मैंने सुना कोई आया है 100
मेरा उधार चुकाने को 101
मेरा जीवन एक स्कूल जैसा है 102
आप शायद मुझसे डरते हो 103
रिश्ता अपना तय कर के तुम 104
बहुत देर तुम मेरे सामने बैठे रहे 105
बहुत दिनों बाद आज तुमसे मिलेंगे 106
जैसे बाज भी परिंदों में रहता है 107
आप क्यों मेरे साथ रहना चाहते हैं 108
इतरा रहे हो या फिर ग़ुस्से में हो 109
परेशान एक अरसे से मेरा मन है 110
आप जब तक मेरे ना हुए 111
ज़िन्दगी भर मैं यूँ ही विचरता रहा, 112
समय मेरा हमेशा साथ ही रहता, 113
कोई आया है ये समझा है मैंने, 114
बंद दरवाज़ो में, घुटके समझा बहुत, 115
उसने दरवाजा बंद ना रखा है कभी, 116

चल पड़ा था मगर अब अटक सा गया, 117
द्वेष कितना ये मन में संजोके रखो, 118
यूँ तो, उनको सब अच्छे लगते हैं, 119
आपसे कभी कभी मिलता रहता हूँ 120
एक ही बार में होंगे दुश्मन सफा, 121
वादे तेरे मेरे भूल ना पाऊंगा, 122
मैं तो चाहूँ मैं जैसा हूँ वैसा रहूँ, 123
एक तो काम ऐसा तुम अच्छा करो, 124
तेरे वादों को कैसे भूला पाएंगे, 125

आपकी भी, कुछ तो कहीं मजबूरी होगी,
जो हर बात, आपकी भी रही अधूरी होगी.

वैसे तो, मैं सदा आपके साथ ही रहूँगा,
लेकिन, बीच मैं दो गज की दूरी होगी.

अपनी बात कहने को, इतनी ज़िद करते थे,
शायद, आपकी कोई बात भी ज़रूरी होगी.

आप जितना चाहो, मुस्कुरा लो अभी,
मेरे साथ जिंदगी, आपकी अंगूरी होगी.

मैं कहते कहते, थक भी जाऊं अगर,
फिर भी, बात तुम से मेरी न पूरी होगी.

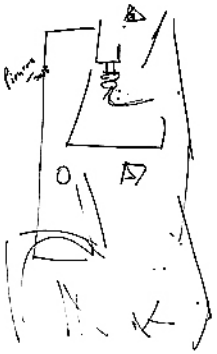

मैंने, जब से, खुद को सजाया यहां,
सबको दिखने लगा, मैं ही पराया यहां.

कोई भी, ना हरा सकता, मुझको कभी,
बस मुझे अपनों ने ही, गिराया यहाँ.

जो कभी थे, वो अब पास हैं ही नहीं,
मेरे अपने ही थे, जिनको पाया यहां.

अब किसी और को, क्या ये इल्ज़ाम दूँ,
मैंने, अपने दिल से, धोखा खाया यहां.

जीने की अब लालसा, रही ही नहीं,
वैसे भी मुझे कब, जीना भाया यहां.

अपने-अपने नए ख्यालों, में ही रहे,
वक़्त बीता, दोनों बातों में ही रहे.

तू गले लग रही, तो सुकूँ मिल रहा,
तेरा अहसास ये, बाहों में ही रहे.

इसलिए लफ्ज़ों को, अहमियत दी सदा,
क्योंकि जज्बात सब, लफ्ज़ों में ही रहे.

बाज जैसे रहे, सब परिंदो में यूँ,
वैसे क़ातिल, मेरे अपनों में ही रहे.

कुछ गुलाबों को, अच्छा समझके रखा,
कांटे भी साथ में, गमलों में ही रहे.

ख़्वाब, दिन में भी, अब सारे देखोगे तुम,
क्यों, अब मेरे साथ, रहना चाहोगे तुम.

मैं तो, परवाने की तरह जलता रहा हूँ,
अब बताओ, क्या ऐसे, जी जलाओगे तुम.

आपकी सोच, क्यूँ है मुझको पाने की,
ग़म सदा मेरे हिस्से का भी, पाआगे तुम.

अपने को, मेरे साथ जलाने की कोशिश में
किसलिए, खुद को मेरे पास, लाओगे तुम.

आपके दिल में, मुझे पाने की हसरत मिटी ?
या, अब भी कुछ बाकी है, कब बताओगे तुम.

इस ज़माने में, जब तुम ना हमारे हुए,
कई दिन हो गए, चैन से गुजारे हुए

जब कभी, इस जगह से हो के गुज़रे,
अपने साहिल के कितने, किनारे हुए.

ख़ुद से भी, हम कभी मिल पाए नहीं,
हां, कभी हम यूँ, ना इतने बेचारे हुए.

इस ज़माने मैं, वैसे बहुत कुछ हुआ,
पर तुम से जुड़े हुए, सब हमारे हुए.

जब, अंधेरा भी तुम्हारे नहीं साथ है,
फिर कैसे, नई ज़िंदगी के सहारे हुए.

अपने दिल की हसरत, क्यों कहते नहीं,
वक़्त होता है, फिर भी क्यों मिलते नहीं.

पास आकर, कभी तो हमें छू लो तुम,
फूल मुरझा गए, फिर ये खिलते नहीं.

राह दिल की, बता देंगे दिल से ही हम,
इन राहों के नक़्शे, कागज पे बनते नहीं.

मेरे कानों में, कुछ गुनगुना दो, कभी तुम,
गीत, दिल से हमारे, कभी निकलते नहीं.

उस दिन, क्या तुमने कह दिया था, हम से
आजतक, अर्थ उसका, हम भूलते नहीं.

प्यार, करने का है डर, तो मैं क्या करूँ,
वो अगर है सितमगर, तो मैं क्या करूँ.

वो अभी तक, हमेशा ज़मीं पर चला,
अब निकल आये हैं पर, तो मैं क्या करूँ.

नींव उसकी ही थी, बस था ढाँचा मेरा,
ढह गया, उसका वो घर, तो मैं क्या करूँ.

आप भी हैं, और मैं भी हूँ, आमने - सामने,
कोई मुझको, बताये बेहतर, तो मैं क्या करूँ.

पूजता हूँ मैं, संगेमरमर की मूर्ति को,
वो अब, बनी है पत्थर, तो मैं क्या करूँ.

कौन किसका सहारा, सही तय करो,
कहाँ सुकूँ का ठिकाना, सही तय करो.

कश्तियाँ जहाँ रखी, क्या दिशा है वही,
जाना कहाँ है, किनारा सही तय करो.

तुम मेरे साथ में रहना चाहोगे, जरूर,
पहले तुम रिश्ता हमारा, सही तय करो.

हर किसी से, बदल जाती है बातचीत,
किसको क्या है बताना, सही तय करो.

हर बार चूक गया, तो क्यों है मायूस,
अब निशाना लगाना, सही तय करो.

यूँ तो, वो सबको अच्छे ही लगते रहे,
फिर, ना जाने ग़लत, वो क्यों कहते रहे.

चाँद खामोश था, वो चला ही नहीं,
आसमाँ में सितारे, बस टहलते रहे.

अपने आप, उनकी तस्वीर उभर आती है,
जब जब, जितने भी चित्र, हमसे बनते रहे.

हो नहीं पाए, हम कभी अपने भी,
साथ होकर, तन्हा हम यूँ झूमते रहे.

दिल सभी दुश्मनों का, है जीता यहां,
गैर अपने ही, हमको लेकिन समझते रहे.

एक अरसे से, मन ये परेशान है,
छिप रही सब से, मेरी पहचान है.

खंडहर से भी ज़्यादा, है उजड़ा मकां,
घर से ज्यादा, जैसे एक श्मशान है.

जब से देखा है, मैंने ये दर्पण यहां,
तब लगा, जिस्म में तो अभी जान है.

मेरे दिल, और मन में, ये उलझन हुई,
ज़िंदगी मेरी, क्यों मुझ से परेशान है.

आस रहती है, की पास आऊं कभी,
तू बता, अब क्या ये इतना आसान है.

आज, उनकी सोच में हूँ मैं,
और अधिक, क्या सोचूं मैं.

न जाने आप, चुप क्यों हो,
इस चुप्पी का, अर्थ न जानूँ मैं.

बोलो, और क्या समझाऊँ मैं,
आपने जिसको चाहा, वही हूँ मैं.

“आप कैसे हैं?” और क्या लिखूं मैं,
मेरे हालात, क्या बेपर्दा कर दूँ मैं.

क्या सोच रहे हो, मेरे बारे में,
तुम जो बोलो, वही लिख दूँ मैं.

अब, भरोसा ख़ुद पर ही रखना होगा,
दुनिया मैं सबसे रिश्ता भी, रखना होगा.

सबसे मिलकर, यहाँ रहना होगा,
अपने को, अलग भी रखना होगा.

औरों की तरह ही, रहना होगा,
अलग एक घर भी, अपना होगा.

करना, अपने मन का ही होगा,
पर बातें अब, सबकी सुनना होगा.

अगर, ये न हो पाऐ, मुझसे तो,
इच्छाओं सहित अपनी, मर जाना होगा.

जो लिखा था लकीरों में, पाया वही,
जिसके लायक रहा हूँ, कमाया वही.

जल्दी-जल्दी में आया यहां, इस तरह,
मैं अपना सुकूँ, तो छोड़ आया वहीँ.

जो मेरे पास था, बस वही तो दिया,
मैंने जो भी सीखा है, सिखाया वही.

मेरी आँखों के सामने, घाव देते रहे,
मैंने इल्ज़ाम उस पे, लगाया वही.

उसने पूछा, तो सारी हकीकत कही,
आईने ने जो दिखाया, बताया वही.

संबंध, सदा आपसे मेरी बना रहे,
इसलिए, शायद हम यूँ मिलते रहे.

आप के आस पास, हम नहीं रहे,
फिर भी, हम आपको देखते रहे.

पत्र आपको, तो मैंने कभी भेजे नहीं,
बस लिख लिखकर, सब फाडते रहे.

मंज़िल नहीं थे, कभी भी आप मेरे,
इसीलिये रास्ते, हम बदलते रहे.

आप तक, हम कभी पहुंचे नहीं,
वैसे उसी राह, पर सदा चलते रहे.

मन मेरा, बँटवारा कराने पर है,
ध्यान सबका, हमें रिझाने पर है.

अब, हर कोई ये सोच रहा है,
किसका नाम, किस दाने पर है.

सबकी नज़रों में, अब मैं ही हूँ,
मेरी नज़र, इस ज़माने पर है.

मेरी जायदाद के, बँटवारे में,
सबका ध्यान, ख़ज़ाने पर है.

डर डर के, मैं सहम रहा हूँ,
मेरा हर बोल, निशाने पर है.

तुम, किसके दम, पर दम भरते हो,
किस बात पर, इतना अहम् करते हो.

मुझसे हर बात, छुपा लेते हो,
अख़बार के जैसे, तुम लगते हो.

शहर में, इस लॉकडाउन के रहते,
कैसे, यूँ हम से, मिलते रहते हो.

सब बोल कर भी, चुप रहते हो,
राम ही जाने, ये कैसे करते हो.

मुझ परदेसी की, यह मजबूरी है,
मेरे घर में, अब तुम रहते हो.

मेरे जीवन में, कुछ करता नहीं हूँ मैं,
क्यों ये सोच कभी, पाता नहीं हूँ मैं.

वैसे, कभी ज्यादा बोलता नहीं हूँ मैं,
गूंगा अपने को, मानता नहीं हूँ मैं.

कोई मंजिल नहीं थी, यौवन मैं,
सही रास्तों से, भटकता नहीं हूँ मैं.

पहले मिलना होता था, कभी कभी,
अब आपसे भी, मिलता नहीं हूँ मैं.

आपको, सदा ये शिकायत रही मुझसे,
क्यों कोई शिकायत, करता नहीं हूँ मैं.

घर से निकले, तो ये अपनी ही हार है,
हर तरफ़, कोरोना की लगी मार है.

कोई भी तो, नहीं दिख रहा है यहां,
सब के घर में, बैठा एक चौकीदार है.

काढ़ा, मेथी, दवा, भाप लो बार-बार,
जो आपको चलानी, ये सांसे लगातार हैं.

जब ये जीने का, अहसास मुझको हुआ,
तब लगा, जीने के दिन, बचे ही चार हैं.

कोई एहसान मैंने, किसीपे किया ही नहीं,
खुद की जान है, खुद से मुझे प्यार है.

जान तू, लाखों में है, जान इक तू,
अपने घर की है, सदा पहचान इक तू.

कौन है तू, ये हमें मालूम है सब,
है तो मेरी ही तरह. इंसान इक तू.

मैं हमेशा मौन रहता था, तभी तो,
लोग कहते थे, शमशान है इक तू.

मैं सही पथ पर, सदा से इसलिए हूँ,
जनता था, राह है आसान इक तू.

मंज़िले होंगी, तेरे कदमों में बेशक,
चलने का अब, कर दे ऐलान इक तू.

लगे हैं हम, उधार अपना चुकाने को,
मगर तू तो लगा है, ब्याज बढ़ाने को.

तज़ुर्बा है, तू रख ले, इस तजुर्बे को,
हमें आता है, कमाना इस ज़माने को.

जिगर रखते हैं हम, तुमसे बड़ा जानम,
बस यही अल्फ़ाज़, काफी है सुनाने को.

सुधरो अब, मुझसे अगर रिश्ता बनाना है,
सीख जाओगे फिर, रिश्ता निभाने को.

मेरी फितरत, वफ़ा की है, हमेशा से,
रवि के पास, दिल ही तो है लगाने को.

हमसे करना है, तो प्यार करते रहो,
या ज़माने से, यूँ ही रोज़ डरते रहो.

साथ रहना है, सोचा था तुमने कभी,
बात जीने की है, फिर क्यों मरते रहो.

आज से ही, जीने की दावेदारी करो,
इस तरह, हो के तैयार चलते रहो.

दिल के जज्बात, ना हम समझ पाएंगे,
तुम, ज़ुबाँ से ही, अपनी बात कहते रहो.

फिर, किसी बात से ना लाचारी रहे,
रवि को दिल से, बस प्यार करते रहो.

ना मेहनत लगी, ना ही पैसा लगा,
मैं सभी को सदा, एक जैसा लगा.

मैं तो, मैं ही रहा हूँ, मैं बदला नहीं,
तुम सच कहो, तुमको कैसा लगा.

लोग कहते हैं, अब तक मैं बच्चा ही हूँ,
जिसने जैसा सोचा, उनको वैसा लगा.

खामोशी से खड़े हो, बड़ी देर से,
कुछ कहना चाहते हो, मुझे ऐसा लगा.

जिसकी जैसी रही हो सोच, उनको,
उनकी सोच की तरह, ऐसा वैसा लगा.

तजुर्बा, एक और करना चाहता हूँ,
मैं खुद से आज, मिलना चाहता हूँ.

जो रिश्ता हम, निभाते आ रहे थे,
मैं वो क़ायम ही, रखना चाहता हूँ.

बहुत, पढ़ाई और लिखाई हो गई है,
अब, तेरा चेहरा ही पढ़ना चाहता हूँ.

तेरा दिल गैर का है, हमने सुना है,
नहीं कुछ और, सुनना चाहता हूँ.

तुझे, किस्से अब बहुत भाने लगे हैं,
अब, क़िस्सा मैं भी बनना चाहता हूँ.

कोई भी काम, मुझको आज खर्चे की तरह लगता,
कांधे पर बोझ जैसे, एक बस्ते की तरह लगता.

कहीं बाहर कोई, पहचान वाला आ नज़र जाए,
जाने क्यों पराया शख्स, अपने की तरह लगता.

मेरे पीछे क्या है, ये साफ सुथरा ही बताता है,
मुझे ये आईना भी, एक चश्मे की तरह लगता.

कभी नाटक, कभी सच है, जीवन को समझ पाया,
गमों को रोज़ छुपा देता, ये पर्दे की तरह लगता.

दिखे मजमे के जैसा, हर तरफ़ माहौल बिखरा है,
मेरा अस्तित्व, मुझे एक जमूरे की तरह लगता.

आप मुझ से भी, शायद डरने लगे हैं,
जब से मिले, खामोश रहने लगे हैं.

तुम दबे पाँव, कमरे में आते हो अब,
क्यों आप ये बर्ताव, ऐसा करने लगे हैं.

मंज़िलों की राहें, आपने चुन ली अलग,
अब अलग रास्तों पर, हम चलने लगे हैं.

बात करनी नहीं, ऐसा कहते हो तुम,
अपना हूँ, फिर पराया क्यों कहने लगे हैं.

हमने मिलकर, बनाया था इक आशियां,
उसके पत्थर, हो के कमज़ोर गिरने लगे हैं.

ज़ुबाँ से हर हकीकत, कुछ पलों में ही निकल जाती है,
अपने तजुर्बे से, ये सबकी सोच, मुझे अखर जाती है.

मेरा कमरा, हमेशा साफ़ सुथरा ही चमकता है,
मगर गंदगी पे क्यों, लोगों की नज़र जाती है.

ज़मीं पर रेंगती है चीटियां, ये फर्श ठंडा है,
बिना देखें चलूं, तो पांव के नीचे मर जाती है.

दीवारों पर टँगी तस्वीरों पर, जाल बहुत हैं लेकिन,
हटाऊँ तो बेचारी मकड़ी, बेघर बिखर जाती है.

कैसे मैं ख्याल इनका भी रखूं, ये समझ आता नहीं,
रखूं गर ख्याल, तो दुनिया मुझ पे ही बिफर जाती है.

जब भी देखा है चेहरा, खुशी ही दिखी,
हमको तुझमें, सदा ज़िंदगी ही दिखी.

वो गलत कह रहे थे, है टूटी हुई,
डोर रिश्ते की हमको, जुड़ी ही दिखी.

सब बताने का वादा, किया था कभी,
राज़ की वो सब बातें, छिपी ही दिखी.

जिनको सोचा था, हमसे है छोटे बहुत,
ख्वाहिशें उनकी, हमसे बड़ी ही दिखी.

लोग कहने लगे, तुम नहीं हो भूले,
याद उनकी, दिल में बसी ही दिखी.

मैं ही जानूं, कि कैसे सम्भाला मुझे,
उसने, अपने घर से भी निकाला मुझे.

मैं अकेला था, कुछ भी नहीं कर सका,
सबने मिलकर आज, मार डाला मुझे.

मुझको, सबकी नजर में गिराया बहुत,
जिसने, पलकों में अपनी ही पाला मुझे.

मिलने लगा था, किसी और से अब,
दिल में उसके, दिखा घोटाला मुझे.

शुक्र कितना, अदा मैं करूँ ऐ ख़ुदा,
खुश किस्मतों की सूची से, नहीं टाला मुझे

मेरे हाथों को थामें, तू जब मेरे साथ चलता है,
ये दिल जैसे, हर पल खुशनुमा महसूस करता है.

बहाना क्या बनाएगा नया, तू सोच के आना,
मेरा दिल, तेरे पुराने सब बहाने याद रखता है.

तज़ुर्बा है तभी तो, सब समझ जाता हूँ मैं खुद ही,
तू इकलौता नहीं है, जो खुली आंखों को पढ़ता है.

मैं ही जानूं, मेरे दिल में कैसा अहसास है होता,
तू जाने ना आखिर क्यों, ये दिल तुझ पे ही मरता है.

लड़ाई हर रोज़ करने की, कौन सी है मेरी आदत,
मैं मिलने जब आता, तू क्यों अपनी आंख मलता है.

तोड़ के, दिल हमारा ही, थमाया हमें,
अपने सुकून के लिए ही, सताया हमें.

तुमने, कल मुझसे मिलने का वादा किया,
कब वो आएगा कल, ये ना बताया हमें.

हमने सोचा, कि कल होगा अच्छा बहुत,
कितना अच्छा रहा, ये तुमने दिखाया हमें.

तुम, पाना हमें चाह रहे थे कभी से,
और, क्या पाने लगे, जो गवायाँ हमें.

सोच लो, हार या जीत, क्या मिल गई,
आपने, दगाबाजी से ही, यूँ हराया हमें.

आज भी, तुमको मैं सोचता ही रहूं,
फिर भी, जाने क्यों भूलता ही रहूं.

तुम रहे, खामोशी से, मैं सोया नहीं,
उसकी, क्या है वजह, खोजता ही रहूं.

और सोचूं, तो क्या सोचूं, इस सोच में हूँ,
बाल हाथों से, मैं अपने, नोंचता ही रहूं.

क्यों बेपर्दा करूँ मैं, तुम्हें इस तरह,
शायरी जो लिखी, उसे फाड़ता ही रहूं.

जब, पुराने ख़त, तुम्हारे मिले मुझे,
उनको हाथों में लेके, बस चूमता ही रहूं.

तुम बड़ी देर तक, पास बैठे रहे,
मैंने जो भी कहा, दाद देते रहे.

बोरियत जो हुई, लोग उठके चले,
लोग ऐसे भी थे, जो कि सुनते रहे.

मेरे अल्फ़ाज़ों में, थी सहजता नहीं,
अर्थ कैसे, ना जाने वो समझते रहे.

राज़ भी जो लिखे थे, वो तुमको कहे,
क्योंकि, उनमें तुम्ही तो मेरे चहेते रहे.

ऐसे भी लोग थे, जो मौन ही रहे,
बात जो भी थी, हमेशा पकड़ते रहे.

हम ज़मीं पर, सभी से जो ज्यादा रहे,
इसलिए, दिल से मर के भी ज़िंदा रहे.

धोखे से हम, कभी भी मिले हैं नहीं,
नेक उसका भी आगे, इरादा रहे.

अगर तोड़ दो, दिल चाहने वाले का,
उससे मिलना सही, जिससे वादा रहे.

ये कभी कम, कभी ज्यादा होता नहीं,
प्यार कहते नहीं, गर वो आधा रहे.

मैं चला जाऊंगा, बस यही सोचकर,
उसकी किस्मत में, ना कोई बाधा रहे.

जी रहे हैं, मगर हमको मारे जहां,
जीत हो गर हमारी, क्यों हारे जहां.

बंट रहे दाने, जब हिस्सेदारों में अब,
किस पे लिखा नाम, विचारे जहां.

मैं भला कर रहा, ताकि दुनिया खिले,
क्यों नहीं, ये भला मेरा स्वीकारे जहां.

जो सही जा रहा हो, सही रास्ते,
क्यों उसपे, ये डाले अंगारे जहां.

मैं समझ जाता हूँ, है जरूरत इसे,
मुझे ही फिर क्यों, ये पुकारे जहां.

नाक में दम किया, तुम वहम ये करो,
कौनसी बात पर, तुम अहम ये करो.

लॉकडाउन के चलते भी, मिलते रहो,
दूर रहने का, थोड़ा रहम ये करो.

राज़ हमने कहे, राज़ तुम भी कहो,
आज बारी है, पूरी कसम ये करो.

आज अखबार के जैसे, तुम हो गए,
सच छुपाने की, तुम रसम ये करो.

हां, नहीं बोलते हैं कभी भी सॉरी,
सॉरी बोलो, लड़ाई ख़तम ये करो.

आपको पता भी है, कि हम कब मिले,
दिन बहुत हो गए हैं, चलो फिर मिले.

अपने मिलने का, मकसद है बस एक ही,
चाहते ख़्वाब, जज्बात, दिल सब मिले.

धर्म हम दोनों का है अलग, तुम कहो,
साथ में मिलके बैठे, तो मज़हब मिले.

मैंने दुनिया में, सबसे सुना है यहां,
जो फरिश्ते मिले, तो लगे रब मिले.

तुम भी क्या-क्या बहाने, बनाते हो जी,
ख़्वाब में आके बोलो, तो हम तब मिले.

दिल में देखा, तो दिल, गुमशुदा मिल रहा,
चोरी हुआ है, वहां तुम्हारा निशां मिल रहा.

तुमसे मिलने को, बेताब दिल है अभी,
पर तुम्हारा, ना कोई पता मिल रहा.

हम नहीं होते तुम पर फ़िदा, क्या करें,
आज आशिक हमें, हर फ़िदा मिल रहा.

इतने दिनों तक, कभी हाथ आये नहीं,
आज तेरा हर ख़त, लिखा मिल रहा.

प्यार करने लगा हूँ, मैं जब से यहां,
शख्स हर एक अपना, खफ़ा मिल रहा.

मैं सही रासते पर, जो चलने लगा,
आपको, आज क्यों फ़र्क पड़ने लगा.

लोग ऐसे मिले, लगे हैं गिराने मुझे,
तब से लगता है, मैं अब भटकने लगा.

अपनों से ज्यादा, जब से हुआ कामियाब,
उनकी आंखों में, तब ही से खटकने लगा.

हाथ में, चंद पैसे क्या देखे मेरे,
हरेक, शक यहां मुझ पे करने लगा.

रूठने से मनाऊं क्या, कितनों को अब,
उन्हें मनाने में, खुद ही हूँ मिटने लगा.

ये ग़लत ही किया, जो जुदा कर दिया,
एक मुज़रिम को तुमने, रिहा कर दिया.

हम परेशां तो, तुमसे कभी के ही थे,
ये करके तुमने, अपना बुरा कर दिया.

आप अल्फाज़ कुछ भी, बोले नहीं थे,
फिर ये कैसे कहूं, अनसुना कर दिया.

हम ये बकवास, फिर आपकी क्यों सुने,
आपने जब हमें, सिरफिरा कर दिया.

तुमने हमको तो, इंसान समझा नहीं,
हमने बस तुमको ही, ख़ुदा कर दिया.

दिल तुम्हारे पास है, तो दिल से ही समझो इसे,
पास आने का, एक तरीका है यही, सीखो इसे.

द्वेष कितना, मन में अपने, तुम संजोये रखे हो,
मैं कभी का भूल बैठा, तुम भी अब, भूलो इसे.

तुम भी अब, औरों के जैसे ही लग **रहे** हो,
हो चुका बर्ताव, गैरों सा बहुत, छोड़ो इसे.

कब तलक, झूठे नकाबों में फंसे रहना है, तुम्हें,
एक हमने भी है देखा, वक़्त हुआ, बदलो इसे.

प्यार का चखना मज़ा, इसका तज़ुर्बा हम को है,
जानते हैं स्वाद इसका, **अब** तुम भी, चखलो इसे.

ऐसी बातें ना हों, जिससे लड़ना पड़े,
साथ में रहके भी, तन्हा रहना पड़े.

जीना सीखा है, खुद के ही दम पर सदा,
ऐसा ना हो, **किसी का** एहसान लेना पड़े.

आईने सा लगूंगा **अब** तुम्हें, मैं जरूर,
ताकि आंखों को मेरी, ना पढ़ना पड़े.

हम हमेशा, सुलझ कर रहेंगे यहां,
ऐसा करना ही **क्यों,** कि उलझना पड़े.

जब से कहना, कलम से शुरू कर दिया,
वक़्त आया ही नहीं, कि गरजना पड़े.

एक अरसा बीता, आज मिलना हुआ,
कैसे मौसम का, एकदम बदलना हुआ.

उनको देखा, तो हमको लगा इस तरह,
जैसे बादलों से, चांद का निकलना हुआ.

जाने कितने दिनों तक, रही दूरियां,
उनके ख़त ना मिले, तो मचलना हुआ.

इन दिनों में रही, बस ये तन्हाई थी,
बैठे-बैठे यूँ तन्हा, तड़पना हुआ.

मैं समझ ये गया था, हम तरक्की पे हैं,
जब से आंखों में सब के, खटकना हुआ.

आप कर सकते, अपनी हिफाजत नहीं,
प्यार मांगा है मैंने, बगावत नहीं.

आप किसके, अभी साथ हैं, ना कहो,
मुझको ये जानने की, जरूरत नहीं.

जो ठिकाना, मेरा आप जानते हो,
अब वहां अरसे से कोई, इमारत नहीं.

आप मुझको, बड़े अच्छे से जानते हो
दर्द में हूँ आजकल, सलामत नहीं.

जो ज़हन में बनायी थी, छवि आपकी,
आप वैसी नहीं, अब आपकी चाहत नहीं.

आप मेरे जैसे नहीं, चाहकर भी हुए,
आज अनजान वो, जानकर भी हुए.

जिसने मर्यादा दहलीज, खींची कभी,
वो तो अच्छे, इसे लांघकर भी हुए.

मैंने सोचा, लिखा फाड़ देता हूँ मैं,
लफ्ज़ आज़ाद, ख़त फाड़कर भी हुए.

ये कहा था, सही हो, तो मानो कभी,
बात मानी, ग़लत मानकर भी हुए.

जिस पे मुझको, नहीं डालने दी नज़र,
अच्छे वो तो, नज़र डालकर भी हुए.

तुम्हारे वास्ते, क्या-क्या समझ कर, लिख सकेंगे हम,
कलम चलती रहेगी, जब तलक ये, ना रुकेंगे हम.

लिखेंगे हम अगर कुछ तो, मुनाफ़ा मिल सकेगा क्या ?
हमें ये चाहिए बस, ज़िंदा किताबों में रहेंगे हम.

खड़े हैं सामने फिर भी, तुम्हें हम ना दिखाई दें,
तो कैसे एक ही अपनी डगर पे, संग चलेंगे हम.

तुम्हें मालूम होगा, रास्ता हर पार हो जाता है,
भरोसा जब तलक, इस तरह खुद पे करेंगे हम.

तुम्हें हम ज़िंदगी भर, सोचते आये हमेशा से,
ये रिश्ता जोड़ के शायद, कभी आगे बढ़ेंगे हम.

हर सुकूँ छोड़के, दर्द को पाने से,
हाल कैसा हुआ है, तेरे जाने से.

मेरे अपने पराये, बुरा बोलते,
थक गया हूँ, सभी के ताने से.

जी रहा हूँ मैं, ऐसे ही, अब इस तरह,
ज़िंदगी चल रही है, बस दवाखाने से.

मैंने तन्हाई में, दिन गुजारे है बहुत,
क्या मिला, तेरी यादों को, फिर लाने से.

खून से, मैंने बढ़कर ही माना था, पर,
मुश्किलें हैं बड़ी, इस रिश्ते अनजाने से.

आपकी आशिकी की, क्या बातें करूँ,
आपकी सादगी की, क्या बातें करूँ.

जिस तरह कनखियों से, मुझे देखा है,
उस अदा शर्मीली की, क्या बातें करूँ.

आपके बिन, नहीं अच्छे हालात हैं,
इस तन्हा ज़िंदगी की, क्या बातें करूँ.

महफ़िलों में, सभी आपको देखते,
उस नज़र दिलनशीं की, क्या बातें करूँ.

हर तरफ़, छा रहा था अंधेरा मगर,
आपसे हुई रोशनी की, क्या बातें करूँ.

देखो, तो यूँ अकेले ही रहते हैं हम,
ख़ुद से ही, हाथापाई भी करते हैं हम.

हम सुलह भी, बड़ी जल्दी कर लेते हैं,
रोज़ ख़ुद से, कई बार लड़ते हैं हम.

हर किसी का, कमा लेते हैं दर्द हम,
खुद फ़ज़ीहत, यूँ अपनी ही करते हैं हम.

आपने जो दिलायी है, हिम्मत हमें,
ज़िन्दा हैं, नहीं अब, मरते हैं हम.

आपने, जो ये रस्म, आज की है अदा,
आपका यह एहसान, अब समझते हैं हम.

मेरे अपनों में, कैसी गदर हो गई,
दुश्मन की चालों की, असर हो गई.

जैसे खुशियां, मेरे घर रही ही नहीं,
मुझसे अनजान वो, इस कदर हो गई.

अब मैं ख़ुद, पूरा तैयार हो जाऊंगा,
ऐसी दिल में मेरे, अब लहर हो गई.

ज़िंदगी भर, मैं घर को सजाता रहा,
इस पे गन्दी, किसी की नज़र हो गई.

याद आया मुझे, कैसे पल थे मेरे,
ज़िंदगी अमृत थी, अब ज़हर हो गई.

हर समय, क्या मुस्कुराना ज़रूरी है,
बेमतलब, क्या ख़ुशी दिखाना ज़रूरी है.

क्या, अपनी पहचान बनाना ज़रूरी है,
और क्या आपको, चाहना ज़रूरी है.

गुम हो जाऊँ, मैं पहचान बनाने में,
क्या ऐसी पहचान, बनाना ज़रूरी है.

पहचान सकूँ, मैं इस दुनिया को,
पर क्या, अपनी पहचान छुपाना ज़रूरी है.

मैं मैं हूँ, मेरा मन है, दुनियादारी भी,
बाक़ी सब को, क्या पहचानना ज़रूरी है.

पास होकर भी, मुफलिस बने ही रहे,
फिर ऐसी दौलत, क्या कमाना ज़रूरी है.

तूने नशा, कुछ ऐसा पिलाया मुझे,
जैसे जिंदगी का, मज़ा आया मुझे.

कोई भी, कभी समझ न पाया मुझे,
क्या समझकर, सबने सताया मुझे.

सबने, अपने ही तरीके से, देखा मुझे,
किसी को समझाना, ना आया मुझे.

अब तुम भी तो, उन्ही में शामिल हो,
और तुम्हारा नाम भी, बताया है मुझे.

मार डालोगे, मुझे एक दिन, मेरी मौत का,
इलज़ाम आएगा, जिसने धमकाया है मुझे.

हर दम, इतना ख़ुश दिखते हो तुम,
बतला दो, क्या क्या करते हो तुम.

मुझको, क्या ऐसे समझाते हो तुम,
आख़िर मुझको, क्या समझते हो तुम.

मेरी बातो को, समझते क्या हो तुम,
कभी मतलब भी, समझ पाते हो तुम.

धन दौलत, पाने की ख़्वाहिश में तुम,
ख़ुद अपना जीवन, यूँ गवांते हो तुम.

जैसा मैं, सच समझूँ तो, अपने को तुम,
मैं अंदर से, ऊपर से ख़ुश रहते हो तुम.

आपका हर गुनाह, अपने सर ही लिया,
फैसला हमने, अपना ये कर ही लिया.

आप खामोशियों में रहे थे, मगर,
आपकी बातों को हमने, सुन ही लिया.

नींद हमको, ना आयी थी, जागे रहे,
आपको ख़्वाब में, हमने देख ही लिया.

ग़म से आज़ाद, खुद को समझने लगे,
खाली कागज देख कर मन भर ही लिया.

हमने ख़त जो लिखा, वो छुपा के रखा,
आपने मेरे हाथ से लेके, पढ़ ही लिया.

जब से, मैं अपने लिए, जीना सीखा हूँ,
तब से ही में, जिन्दा रहना सीखा हूँ.

वैसे तो अब मैं, एक पुराना खंडर हूँ,
लेकिन, शीशमहल में रहना सीखा हूँ.

मैं स्वयं ही, नहीं देख समझ पाया कभी,
पर कुछ अपनों की, मंज़िल बनना सीखा हूँ.

जब से, मुझको उनका साथ मिला है,
तब से ही, मैं बेहतर कहना सीखा हूँ.

आखिर, मुझको भी मर जाना ही है,
जब तक हूँ, शान से जीना सीखा हूँ.

अब आप, किसके साथ है, किसके नहीं,
यह जानकर, दिल हमारे सुलगते नहीं.

जो ठिकाना, आप मेरा जानते हैं,
एक अरसे से, हम वहां रहते नहीं.

आप हमें, अच्छी तरह पहचानते हैं,
अपनी ज़ुबान से, मगर कुछ कहते नहीं.

जो तस्वीर बनायी थी, हमने अपने ज़हन में,
आप वैसे, वैसे तो बिलकुल भी लगते नहीं.

बातें तो, बहुत करते हो आप, मेरे बारे में,
लेकिन, आप कभी हमें समझते नहीं.

अब कुछ दिन, मैं अनजान रहना चाहता हूँ,
अपना चेहरा, किसी और को देना चाहता हूँ.

पहले ख़ुद को, पूरा तैयार कर लूँ,
फिर, दुनिया से निपटना चाहता हूँ.

उनको चिट्ठी में, मेरा पैग़ाम लिख दूँ,
लिफ़ाफ़े में, ख़ुद को भेजना चाहता हूँ.

जीवन भर, घर को सजाता रहा हूँ,
अब किसी और के घर में, रहना चाहता हूँ.

जो लोग, अपनी बातों से, तक़लीफ़ देते हैं मुझे,
उन सभी को, अब मैं माफ़ करना चाहता हूँ.

लफ्ज़ खोलो, नहीं कोई ख़तरा रहे,
बोलने से अभी क्यों, हो कतरा रहे.

इतने क्यों, लग रहे आज चुपचाप हो,
गुस्से में हो, या लगता है इतरा रहे.

और, इससे क्या ज्यादा, तुम्हें होना है,
रूप जैसा है, वैसा ही, निखरा रहे.

हम तुम्हें, दे रहे हैं, इजाजत अभी,
सन्नाटा फिर कभी, ना ये पसरा रहे.

कोई भी हो परेशानी, खुल के कहो,
ताकि, मन में ना कोई, कचरा रहे.

क्या आप, मुझ जैसे जी सकते हैं,
जहर का प्याला, क्या पी सकते हैं.

ज़्यादातर रिश्तों के, नाम होते हैं,
क्या बिना नाम के रिश्ते, जी सकते हैं.

मेरा कुछ अपना, आपके पास है,
उसे अब मेरे नाम, कर भी सकते हैं.

मुझे उनके नाम से, क्या मतलब,
क्या आप मेरा नाम, कर भी सकते हैं.

जो कुछ सहा मैंने, अपने जीवन में,
क्या आप अनुभव, कर भी सकते हैं.

गम मिले तो, सुकूँ ऐसे खोजा नहीं,
आशियाना बदलने का, सोचा नहीं.

हद से ज्यादा बढ़ी, जिम्मेदारी मगर,
मैंने सोचा, ये मेरा है, बोझा नहीं.

आपने हम से, रिश्ता बदल जो लिया,
मैंने बालों को अपने , कभी नोचा नहीं.

एक ही बार ठगने का, मालूम हुआ,
दिल कहे, इसमें कुछ भी, लोचा नहीं.

हाथ आया, तो लोगों से, क्या कुछ सुना,
जानकर भी, जो दुश्मन दबोचा नहीं.

ऐसा अहसास, दिल को भी होने लगा,
साथ पाकर, सुकूँ से मैं सोने लगा.

दिल ज़मीं, खाली मुझे क्या मिली,
ख्वाबों के बीज, लेके मैं बोने लगा.

साथ रहके, खुशी दिल को, मिली बहुत,
जब ये अकेला रहा था, तो रोने लगा.

साथ इतना अलग, जो मुझे मिल गया,
ये **मेरा** ज़माना ही, आपा है खोने लगा.

जब पता चल गया, साथ अब ना रहा,
पूरी दुनिया का गम, मैं ही ढोने लगा.

आपके साथ में, रहता जब तक रहा,
एक ही जैसा, अपना ये मज़हब रहा.

रास्ते पर, मैं जाने क्यूँ, कहाँ जा रहा,
राह में तुम मिले, मैं सफल तब रहा.

मैं सदा, अपने सपनों में खोया रहा,
होश में, मैं ना जाने, कहाँ कब रहा.

कोई भी, पूछने हाल, कभी आया नहीं,
मैं अकेला रहा, महफ़िल में, जब-जब रहा.

रख भरोसा, चला था मैं, तब इस कदर,
साथ में, जैसे मेरे यहां, मेरा रब रहा.

हालातों से, मुझे कई बार लड़ना पड़ा,
मुझको, अपने मकां को बदलना पड़ा.

सब लोग, ऊपर पड़े जा रहे थे मेरे,
मास्क, मुझको लगाकर, सम्भलना पड़ा.

आपने, मुझसे रिश्ता, जो बदला कभी,
रास्ते पर नए, फिर मुझे निकलना पड़ा.

मुझको उलझाया, जो उलझनों में बहुत,
उलझनों में, तुम्हें भी उलझना पड़ा.

भूल रिश्ते गया हूँ मैं, सब आजकल,
वक़्त आया, समझदार बनना पड़ा.

क्या, अभी भी वही, पहले थे वैसे हो ?
दोस्त, तुम ही बताओ, कि अब कैसे हो.

सच कहूं, हमको जो है लगा देखके,
देखा, पहले नहीं ऐसे थे, तुम जैसे हो.

ज़िन्दगी के लिए, सोच ये ही रही,
है सुकूँ भी, अगर जेब में पैसे हो.

दूजे के साथ, अपना भी सोचे नहीं,
यार, बुज़दिल के जैसे ही, तुम ऐसे हो.

आदतें अब, भले ही बदल सी गई,
फिर, अब भी वही, जैसे के तैसे हो.

बात गूंगे से भी, करना चाहूंगा मैं,
ख़ामोशी को भी, अब सुनना चाहूंगा मैं.

अपने मन के जज्बात, कह मैं सकूं,
ऐसा इंसान, अब बनना चाहूंगा मैं.

मैंने, अब तक जो कुछ भी लिखा है, सभी,
एक दफ़ा फिर, उसे पढ़ना चाहूंगा मैं.

वैसे तो कोरा कागज है, ये मन है मेरा,
अब इसी पर ही सब, लिखना चाहूंगा मैं.

हर तरफ़, शोर ही शोर मचता दिख रहा,
क्या किसी से ये गम, कहना चाहूंगा मैं.

वो ज़माने से, जब तक छुपा ना सका,
राज़ को राज़, तब तक बना ना सका.

इस ज़माने की, ख़बरों में था इस कदर,
फिर सर वो कभी, ऊपर उठा ना सका.

जो, गुनाहों के बलबूते जीते रहे,
आज इल्ज़ाम उन पर, लगा ना सका.

हो गया है, वो मशहूर दुनिया में अब,
जो कि गीतों से बाहर था, आ ना सका.

हर तरह की, वो दौलत कमाता रहा,
प्यार की पर, वो दौलत कमा ना सका.

मुझसे मिलना, तुम्हारा हो सकता नहीं,
शख़्सियत कोई मेरी, ढो सकता नहीं.

दिल ज़मीं पर, वफ़ा की फसल ही उगे,
बीज ऐसा कोई भी, मैं बो सकता नहीं.

वो क्या पायेगा, कुछ इस ज़माने में अब,
जो ज़रा भी सुकूँ को, खो सकता नहीं.

लड़का है, तो सभी उसमें जज्बात है,
ये **किसने कहा कि** वो, रो सकता नहीं.

इस जनम को, सफल क्या करेगा भला,
पाप कर्मों से, जो कभी धो सकता नहीं.

अपना इतना बना, मेरी जां सा लगा,
साथ ऐसा रहा, कारवाँ सा लगा.

खण्डहर ही है, तुम बिन महल ना बना,
तुम रहे तब, मकां ये मकां सा लगा.

मैं ज़मीं पर चला, साथ तुम जो रहे,
मुझको अहसास ये, आसमां सा लगा.

वक़्त के साथ, बूढा हुआ जिस्म था,
आईना तुम बने, मैं जवां सा लगा.

इस ज़माने की, मुझको ज़रूरत क्या थी,
तुम्हारा साथ ही मुझे, पूरे जहाँ सा लगा.

कितना अच्छा लगे, मेरे घर सा बने,
ज़िन्दगी का मेरे, हमसफ़र सा बने.

सब गमों को, बहाकर ले जाये कभी,
ऐसी बहती हुई, एक लहर सा बने.

ये ज़माना, तो चाहेगा वो ना रहे,
मैं नहीं चाहूँगा, वो ज़हर सा बने.

गांव सा है, सुकूँ आज उसमें बहुत,
इसलिए चाहता, ना शहर सा बने.

वो बताता सही है, आगे की दिशा,
इस ज़माने में वो, एक डगर सा बने.

आप महफ़िल में, मेरी कहानी कहे,
ऐसा लिख दो, कलम ये जवानी कहे.

अहमियत जिसकी जो है, वो जाने जहां,
आंसू को आंसू लिख दो, ना पानी कहे.

यूं ही तुम मेरा रंग, ये जमाते रहो,
ताकि दुनिया, हमें खानदानी कहे.

मुझको, राजा का दर्जा देना इसलिए,
ताकि दुनिया तुम्हें, मेरी रानी कहे.

झूठ से मेरी, पहचान ना ये बने,
आप, मेरी ही सच्ची ज़ुबानी कहे.

सोचता हूँ, ना खाऊंगा धोखा कभी,
अच्छा होगा मिलन, जब होगा कभी.

हम किसी को, ना मजबूर कर सकते हैं,
ना ही करने का ऐसा, है सोचा कभी.

आ रहे थे, मेरे पास, कब से ही तुम,
याद है तुमने ही, खुद को रोका कभी.

ज़िंदा रहने की अपनी, कभी सोच थी,
इसलिए तुमको, अपना यूँ बोला कभी.

वो क्या, मजबूर तुमको करेगा यहां,
जिसने खुद को, कई बार कोसा कभी.

ऐसा देखा यहां, ये कई बार है,
हर तरफ नफरतों की, लगी मार है.

आपकी भी, तो मजबूरी थी प्यार में,
हम अकेले नहीं, जो गुनहगार है.

ऐसी बातें भी है, जो अधूरी कही,
तुम भी वैसे ही हो, जैसा संसार है.

वैसे तो मैं, सदा साथ ही हूँ यहां,
बात ये है अलग, हम शहर पार है.

आपकी शख़्सियत, है अधूरी अगर,
आपके दिल में, दूजा कोई यार है.

हां, कई दिन से, तेरा नहीं साथ था,
इसका मुझको, कभी से अहसास था.

प्यास कैसे बुझाता, मैं अपनी यहां,
एक समंदर था, लेकिन नहीं पास था.

तन से चाहे, वो अब एक बैरागी लगे,
पर मन में उसके, नहीं संन्यास था.

फूल नाज़ुक के जैसे, थी वो इस तरह,
जैसे भँवरा उसका, मैं कोई खास था.

उसके बारे में, लिखता तो क्या, मैं यहां,
उसका पुराना, ना कोई इतिहास था.

घर में, आने दिया ना उजाला कभी,
तुमने ऐसे रखा, इसपे ताला कभी.

हमने खुद सामने, अपना सर कर दिया,
आपने जब भी, खंजर निकाला कभी.

हम दिलों में बसे, कामियाबी से जो,
तुमने दुनिया को, दिल में सम्भाला कभी.

लोगों की हर खुशी से, दुःखी जो हुए,
चैन से खा पाए हो, इक निवाला कभी ?

अच्छे कामों से तुमने, मना कर दिया,
इस तरह, गन्दे कामों को टाला कभी.

जब, नशे से किसी ने जगाया नहीं,
ज़िंदगी भर, हमें होश आया नहीं.

प्यार दोनों के हिस्से, रहा उम्र भर,
क्या समझकर, उसे भी सताया नहीं.

क्या हुआ था, जो हमको रुलाया बहुत,
तुमने सच, वो कभी भी बताया नहीं.

सबने, अपने तरीके से देखा हमें,
पर कोई भी, समझ हमको पाया नहीं.

ज़ख्मों की हर वजह, बस वही तो रहे,
उनपे इल्ज़ाम हमने, लगाया नहीं.

यार, परदे से बाहर तो आओ कभी,
अपने जज्बात, हमको बताओ कभी.

हम भी तो देखें, कैसे हो तुम हमसफ़र,
दिल के नज़दीक, ख़ुद को भी लाओ कभी.

हमसे कितनी दफ़ा, मिल लिए हो सनम,
अब ख़ुद को भी, ख़ुद से मिलाओ कभी.

हम अलग कितने सब से, तुम्हारे लिए,
अपने सब आशिकों को, दिखाओ कभी.

दूर क्यों होते हो, साथ बैठो, मिलो,
आओ, प्यार से चाय भी पिलाओ कभी.

मेरे जीवन में, जो था, वो अब ना रहा,
क्योंकि पहले के जैसा तो, लग ना रहा.

प्यार से ही, भरोसा उठ गया है मेरा,
साथ जब से, धोखेबाज ठग ना रहा.

जो मेरे वास्ते, छोड़ा था देखकर,
ख्वाब वो दूर तक, मुझे दिखाना रहा.

राज़ कितने छिपे थे, जो पढ़ ना सका,
उसके ख़त को, तसल्ली से पढ़ना रहा.

बोल ना पाया खुलके, तो समझा गलत,
गूंगा होने का, ऐसा उसे शक ना रहा.

चाहे दिखता सभी को, सवेरा बहुत,
पर मुझे मुश्किलों ने, है घेरा बहुत.

मुझको लगता नहीं, पर सितारे मेरे,
कह रहे, भाग्य अच्छा है, तेरा बहुत.

चाहने वालों को, ना खुशी, ना सुकूँ,
मन दुःखी हो रहा,, आज मेरा बहुत.

मुझको बोला, मिलेगा तुम्हें काफ़िला,
बस सूने रास्तों पर, किया फेरा बहुत.

राह ऐसी, वफ़ा की मैंने जान ली,
बस यहां, गम का मिलता है, डेरा बहुत.

मेरा दिल, तुमसे मिलना चाहता है,
पर तुम्हारे घर का, नहीं पता है.

तुम तक पहुँचना, मेरी मंज़िल है,
कैसे पहुँचूँ, कौन सा रास्ता है.

तुम्हें पाना, बस यही एक सपना है,
जो मेरा मन, जागते हुए देखता है.

मुझको, क्या समझते हो तुम,
या, तुमको कोई समझाता है.

मेरी दुनिया, तुम्हारे आस पास ही है,
पर सही रास्ता, कोई नहीं बताता है.

मेरा समय है, साथ मेरे,
बचपन मेरा है, साथ मेरे.

एक भरोसा है, साथ मेरे,
सब अपनो का, साथ मेरे.

कोरोना का, वक़्त बुरा है,
हर कोई है, अब साथ मेरे.

जब, दुनिया को छोड़ चलूँ,
रहे, तेरा सपना साथ मेरे.

अकेला, फिर भी अकेला ही हूँ,
कोई कब तक रहेगा, साथ मेरे.

मैंने सुना, कोई आया है,
मैंने समझा, कोई आया है.

मुझे अपने में, डूबा सके कोई,
ऐसा प्रिय, कोई आया है.

इतने सारे, पराऐ लोगो में,
शायद अपने जैसा, कोई आया है.

पहुँचाए मुझे, कोई मंज़िल तक,
ऐसा पथ प्रदर्शक, कोई आया है.

वो भले, मेरा आलोचक ही सही,
मेरा अपना, कोई आया है.

मेरा उधार चुकाने को,
तू है उधार बढ़ाने को.

रख ले मेरे तजुर्बे को,
औरो को सुनाने को.

सुधार अपने संबधों को,
अच्छे संबंध बनाने को.

नई भूलना क़िस्मत को,
सलाह मेरी अपनाने को.

याद रखना मेरी इन बातों को,
सब पर अपना रंग ज़माने को.

मेरा जीवन, एक स्कूल जैसा है,
कांधे पर बोझ, बस्ते जैसा है.

मेरा जीवन भी, नाटक जैसा है,
यहाँ कोई नहीं, मेरे जैसा है.

माहौल हर तरफ़, मजमे जैसा है,
मेरा अस्तित्व, एक जमूरे जैसा है.

पर्दा आपका, झिलमिल सा है,
छुप छुप कर भी, दिखाने जैसा है.

तुम्हारा होना, एक ग़ज़ल जैसा है,
चुप रहकर भी, बहुत कुछ कहने जैसा है.

आप शायद, मुझसे डरते हो,
क्या इसलिए, चुप रहते हो.

दबे पाँव, कमरे में आते हो,
और, मुझे चौंका देते हो.

अच्छा है, तुम्हारा आने का तरीका,
जिस तरह, प्यार से दस्तक देते हो.

बात नहीं करनी, ये कहते हो,
यह कहकर भी बात करते हो.

मैं चलता हूँ, आगे आगे,
आप सदा, पीछा करते हो.

रिश्ता अपना, तय कर के तुम,
दुनिया में, मेरे साथ रह सकते हो.

हम दोनो को, गर कोई पूछे तो,
हमारे इस रिश्ते को, क्या कहते हो.

अपने सपनो को, ख़ुद बतलाने दो,
तुम मेरे सपनो में, कब से रहते हो.

जो तुमने, पलको में संजो रखे हैं,
उन सपनो को, फिर से आने दो.

लॉकडाउन में, बंद पड़े सब रास्ते हैं, तो,
मुझे सपने में ही, अब विचरने दो.

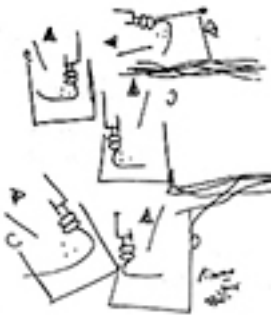

बहुत देर, तुम मेरे सामने बैठे रहे,
मेरी कविताओं पर, दाद देते रहे.

बाक़ी सब लोग, तुमको देखते रहे,
फिर भी, तुम मुझको सुनते रहे.

सारी दुनिया से, तुम बेख़बर रहे,
तुम बस, मुझको ही देखते रहे.

हम, कवितायें तुमको सुनाते रहे,
तुम, अर्थ अपने आप समझते रहे.

आपके भावों को, सुना रहा था मैं,
और गीत, अपने आप बनते रहे.

बहुत दिनों बाद, आज तुमसे मिलेंगे,
क्या बात करेंगे, जब तुमसे मिलेंगे.

हम, शब्दों की बस तलाश करेंगे,
नहीं होंगी बातें, जब तुमसे मिलेंगे.

हम, अपनी अपनी बातें कहने को,
दोनों बहुत तरसेंगे, जब तुमसे मिलेंगे.

तुम जब अपने को, मुझमें देखोगे,
क्या क्या गुल खिलेंगे, जब तुमसे मिलेंगे.

वैसे, अब इन बातों में क्या रखा है,
ये ही बहुत है की, अब हम तुमसे मिलेंगे.

जैसे बाज भी, परिंदों में रहता है,
मेरा क़ातिल भी, अपनों रहता है.

आपस में, इंसानी रिश्ता कहाँ रहता है,
वो तो सिर्फ़, क़िस्से कहानियों में रहता है.

मेरा ध्यान, पढ़ने लिखने में रहता है,
इसीलिए मेरा मन, किताबों में रहता है.

दुनिया का माहौल, महसूस करूँ तो,
मेरा ध्यान टी वी, अख़बारों में रहता है.

पैर सदा, जमीन पर टिका रहता है,
फिर भी मन मेरा, सितारों में रहता है.

आप क्यों, मेरे साथ रहना चाहते हैं,
दिन में भी, सपने देखना चाहते हैं.

परवाने की तरह, जल जाना चाहते हैं,
आप क्यूँ, क्यूँ, मुझे पाना चाहते हैं.

क्यूँ करते हैं, अपने को जलाने की कोशिश,
जलती आग से, रौशन होना चाहते हैं.

बेमतलब, अपने आप को जलाकर आप,
हमारे सामने, क्या साबित करना चाहते हैं.

ये कब समझ पाएंगे आप, कि,
हम किसी और से, प्यार करना चाहते हैं.

इतरा रहे हो, या फिर ग़ुस्से में हो,
आज क्यों, इतने चुपचाप से हो.

कोई प्रिय, तुम्हारा अकेला है क्या,
क्या ग़म है, कि इतने चुपचाप से हो.

बता दो, अगर मेरी कोई ख़ता हो,
गुनाह मैंने किया, आप चुपचाप से हो.

अपने आपको, आईने मैं देखकर,
क्या बुरा लगा, कि इतने चुपचाप से हो.

इस चुप्पी का, क्या मतलब निकालूँ में,
जब से आये हो, एकदम चुपचाप से हो.

परेशान, एक अरसे से मेरा मन है,
खंडर से ज़्यादा, उजड़ा मेरा आँगन है.

जब से, देखा है मैंने वो दर्पण,
तब से, दिलोदिमाग़ में उलझन है.

इच्छा होती है, तुम्हारे पास आने की,
तुझमें ही तो, मेरे दिल की धड़कन है.

सदा लड़ता हूँ मैं, अपने आप से,
क्योंकि मेरा अस्तित्व ही, मेरा दुश्मन है.

अब और, क्या क्या शौक़ फ़रमाए हम,
घर की सबसे बड़ी ज़रूरत, तो राशन है.

आप, जब तक मेरे ना हुए,
हम ख़ुद भी, अपने ना हुए.

आप कभी, नदी से ना बहे,
हम कभी, किनारे ना हुए.

ख़ुद से कभी, मिल भी न पाएँ,
फिर भी, कभी अकेले ना हुए.

वैसे तो दुनिया में, बहुत कुछ हुआ,
लेकिन, हम कभी आपके ना हुए.

हम देखते ही रहे, राह उनकी,
बस इन रातों के, सवेरे ना हुए.

ज़िन्दगी भर, मैं यूँ ही विचरता रहा,
बस प्यार की राह में ही, भटकता रहा.

कई बार भटका, मैं अपनी मेरी राह से,
खुद वजह था, जो दूजे से पिटता रहा.

मेरे अपने, सभी दूर होते गए,
पर सहारा उन्हीं को, मैं देता रहा.

कीमती वक़्त, समझा के नादान को,
समय अपना, ज़ाया ही करता रहा.

राज़ कह डाले मैंने, ज़माने को सब,
इस तरह, मैं ज़माने से मिटता रहा.

समय मेरा, हमेशा साथ ही रहता,
तभी तो, मैं यहां आजाद ही रहता.

दगाबाजी, नहीं ज्यादा दिनों की थी,
नहीं तो, वो सदा बर्बाद ही रहता.

अगर, मन ना लगाता काम में अपना,
तो फिर, तेरा गम मुझे याद ही रहता.

पढ़ा ख़त, फाड़ती ना वो कभी मेरा,
लिखा अल्फ़ाज़ हर, आबाद ही रहता.

नया करता नहीं, कर्मो से अपने तो,
सभी के वास्ते, बेबुनियाद ही रहता.

कोई आया है, ये समझा है मैंने,
ये तभी तो, वेश बदला है मैंने.

मर रहा था, जो निगलके मैं सदा,
वो ज़हर, ना आज निगला है मैंने.

सामना ना कर सकूं, जिसका कभी,
नाम खुद बेशक, वो उगला है मैंने.

खास जो कर दे, ज़माने में मुझे,
ख्वाब में देखा, वो बंगला है मैंने.

मेहनत के बाद, जो मिलता वही,
उस सुकूँ को आज, पाला है मैंने.

बंद दरवाजों में, घुटके समझा बहुत,
मौत के हर शिकंजे में, उलझा बहुत.

छोड़ने का, जिसे दिया था वास्ता,
मैं उसी रास्ते से, हूँ निकला बहुत.

ये कहा था, कि बदलूंगा मैं फिर से,
अब कम समय में, वो बदला बहुत.

राह हो कोई भी, बस अकेला चला,
साथ चलने में, लगता है खतरा बहुत.

वो पास आया मनाने, मैं माना नहीं,
किया माफ मैंने, जब वो पिघला बहुत.

उसने दरवाजा, बंद ना रखा है कभी,
खिड़की पर भी, ना पर्दा रखा है कभी.

हालात अच्छे नहीं, तुम्हें क्या कहें
दिल हमारा भी, टूटा रखा है कभी.

नज़रों से दूर, जैसे कोई कर गया,
यूँ किसी ने, तन्हा रखा है कभी.

उसके हाथों में, देखा है गहरा निशाँ,
जैसे मन्नत का, धागा रखा है कभी.

खूबसूरत सा मुखड़ा, यूँ मुरझा दिखा,
कुछ तो गहरा सा, सदमा रखा है कभी.

चल पड़ा था, मगर अब अटक सा गया,
रास्ते पर ही हूँ मैं, या भटक सा गया.

ऊंची चोटी पे जाकर, खड़ा था मगर,
हौसला मेरा, जैसे छटक सा गया.

जब से कमज़ोर, खुद को बनाया यहां,
अपनी नज़रो में ही, मैं खटक सा गया.

ये वफ़ा राह की है, ना मंज़िल मिले,
अब ना चल पाउँगा, मैं थक सा गया.

कीमती लोगों का, दिल ना टूटे कभी,
उसके मन में, बड़ा ये सबक सा गया.

द्वेष कितना, ये मन में संजोके रखो,
मेरा कहना है, इसको तुम रोके रखो.

नफरतों का हो अंबार है, ये तो ग़लत,
दिल में फसलें, वफ़ा की भी बो के रखो.

जिसमें खाया है तुमने, कोई धोए क्यों,
खुद के झूठन के बर्तन है, धो के रखो.

हो कमज़ोर, तो भी है ताकत भरी,
औरों की आंखों में, धूल झोंके रखो.

सोचते हो पराये, तो गम किस बात का,
बाजी पलटने के, साथ में मौके रखो

यूँ तो, उनको सब अच्छे लगते हैं,
लेकिन प्यार, सिर्फ़ हमीं से करते हैं.

ये जो आसमान में, चाँद सितारे टहलते हैं,
हम जैसे ही, बिन घर के बंजारे लगते हैं.

अपने आप, उनकी तस्वीर उभर जाती है,
जब जब, जितने भी, चित्र हमसे बनते हैं.

जीवन भर, हो सके ना हम, कभी अपने भी,
सबके साथ होकर भी, अकेले ही रहते है.

दुश्मन सारे के सारे, हमने जीत लिए हैं,
अब तो हम, अपनों के लिए ही मरते हैं.

आपसे, कभी कभी मिलता रहता हूँ,
अब शायद इसलिये, ज़िंदा रहता हूँ.

आपके सपनों में ही, खोया रहता हूँ,
पता नहीं मुझे, जाने कैसे रहता हूँ.

मैं स्वयं तो, कभी कुछ नहीं करता हूँ,
आप के पदचिन्हों का, अनुसरण करता हूँ.

आज, मैं ये राज आपको बतलाता हूँ,
मैं अपने आप का, आईना बनता हूँ.

मैं अपने होश में, कभी नहीं रहता हूँ,
होश में आया तो, दुनिया छोड़ना चाहता हूँ.

एक ही बार में, होंगे दुश्मन सफा,
चाल ऐसी चलूंगा, मैं अब की दफ़ा.

मुझको, झूठा समझते हैं, जो भी यहां,
याद सदा करते रहेंगे, मेरा फ़लसफ़ा.

कोई धोखा नहीं, मैंने अब तक दिया,
किसलिए कर रहा है, वो मुझको खफ़ा.

जो दावा वफ़ा का, यहां कर रहा,
सुनने में आया है, वो रहा बेवफ़ा.

मुझको खुद से भी, ज्यादा समझता था जो,
वो पराये के जैसे, क्यों मांगे नफ़ा.

वादे तेरे मेरे भूल ना पाऊँगा,
राह पर मैं अगर तुझसे टकराऊँगा।

जब भी यादें सताएगी तेरी मुझे,
तब में तेरे मकाँ पे चला आऊँगा।

चाहे मैं भूल बैठा कई बातों को,
पर तुझे भूलने से मैं कतराऊँगा।

मैंने पाया सुकूँ तेरे नज़दीक ही,
राह पर आ गया तो मैं पछताऊँगा।

ये तज़ुर्बा वफ़ा का हो नाकाम तो,
मैं ज़माने में खुदगर्ज कहलाऊँगा।

मैं तो चाहूँ मैं जैसा हूँ वैसा रहूँ,
तुम नहीं चाहते हो मैं अच्छा रहूँ।

दो तुम्हारा उतारा हुआ ही सही,
देखूं तो मैं नकाबों में कैसा रहूँ।

प्यार में छल का कोई नहीं काम है,
मैं सदा चाहता हूँ मैं सच्चा रहूँ।

देख नादानियां जग गया प्यार जो,
दिल कहे तेरे संग मैं भी बच्चा रहूँ।

खुद का मुझको ही तो सोचना है यहां,
लोगों की ये नियत है मैं कच्चा रहूँ।

एक तो काम ऐसा तुम अच्छा करो,
ओ! सनम आज हमसे ना परदा करो।

हम भी तो देखें कैसे हो तुम हमसफ़र,
रास्ते में कभी संग आया करो।

तुम नहीं जानते हो कि तुम चीज़ क्या,
हम बता देंगे हमसे तो पूछा करो।

इस तरह हमसे छुपके क्यों रहते हो तुम,
ज़िंदगी का समय तुम ना ज़ाया करो।

दूर रहना नहीं साथ बैठो ज़रा,
ये अलग ही सुकूँ है कमाया करो।

तेरे वादों को कैसे भूला पाएंगे,
ज़िंदगी कैसे अपनी चला पाएंगे।

दोनों मिलके जलाते थे जिस दीप को,
वो खुशी का दीया ना जला पाएंगे।

खुद को ही ना रहा जो था अब तक बना,
क्या भरोसा किसी को दिला पाएंगे।

प्यार की वो शिलाएँ ना बच पाई है,
आशियाँ उसका कैसे बना पाएंगे।

जिनसे आंसू की रफ़्तार थमती नहीं,
ऐसे नयनों को हम ना रुला पाएंगे।

उम्मीद मुबारक !
नाम ही खुशी लाता है... इस महामारी में मुश्किलों के बीच खुशियों को समेटने का अभिवादन।
मेरे प्यारे दोस्त रविन्द्र मरडिया द्वारा गजलों का एक सुंदर संग्रह।

रहस्यों की मेज को मोड़ना,
सहानुभूति की पहेली का महिमामंडन,
वह शब्दों से सांसारिक इच्छाओं पर विजय प्राप्त कर रहा है, अपने दर्द को भावनाओं के रंग में डुबाना.
जहां इमोटिकॉन्स को लाइनों में तैयार किया जाता है...

मेरा मानना है, कि उन्होंने एक लेखक होने की विरासत को गढ़ा है और भावनात्मक उथल-पुथल से सुंदर तरीके से निपटने के लिए इस तरह की अभिव्यक्ति में खुद को पुनर्जन्म दिया है। उनके लिमरिक थोड़े विनोदी हैं लेकिन उनके दृष्टिकोण में एक चुटकी दर्द और सादगी, इसे अद्वितीय और अलग बनाती है। यह चपाती पर पीनट बटर खाने जैसा है। परोसी गई थाली स्वादिष्टता से भरी हुई है फिर भी भीतर के दिल के दर्द को छू रही है।

अपनी ग़ज़लों के माध्यम से उन्होंने हमें जीवन की एक झलक दी है जहाँ दर्द को सरल बनाया जा सकता है, भावनाओं को सरलता से सम्मानित किया जाता है और यह सादगी उनके व्यक्तित्व की शान है। उनका लेखन उनके व्यक्तित्व और रोजमर्रा की जिंदगी में स्थितियों से निपटने के उनके तरीके को दर्शाता है।

भावनात्मक कल्याण की गहराई में अधिक लिप्त होने पर, कोई उनकी ग़ज़लों से जो सीख सकता है, वह यह है कि चाहे दर्द हो या खुशी, जीवन में दर्द होने पर धीमी गति से चलना और थोड़ी खुशी मिलने पर जेब में खुशी इकट्ठा करना।

हमने एक बार में एक दिन लेने के बारे में सीखा है, उनकी ग़ज़लें मुझे एक समय में एक पल लेने, धीमे चलने, वर्तमान को संजोने और सभी दर्द और दुखों को दूर करने की याद दिलाती हैं।
पल में जियो - यही सार है...
तो, पहले शब्द में भावना का समापन
वह "उम्मीद मुबारक" कहकर एक उम्मीद दे रहे है...

आभार

पिसुरवो के रूप में जाने जाने वाले चित्रकार जितेंद्र सुरलकर की कलात्मक क्षमता बहुत कम उम्र में ही स्पष्ट हो गई थी. उनकी रचनात्मकता असाधारण है, और इस पुस्तक में उनके द्वारा बनाई गई रुचि और शैलियों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है। उनकी ये कलाकृतियां कविताओं को कहानी में खींचतीं है. जितेंद्र सुरलकर पिसुरवो एक प्रसिद्ध वरिष्ठ कलाकार हैं, जो मुंबई भारत से रहते हैं और वहीँ काम करते हैं.

हम उनके इस सहयोग के लिए हृदय से आभारी हैं.